ISSN 2581-9917

आत्म चिन्तन

साक्षी मोंगा*

इधर उधर सब झांक रहे हैं,
पर खुद के अंदर झांके कौन?

दुनिया में कमियाँ सब निकाल रहे हैं,
पर खुद के अंदर निकाले कौन?

दूसरो की खूबियों से सब जल रहे हैं,
पर खुद में खूबी तलाशे कौन?

इंसानियत की बातें सब कर रहे हैं,
पर खुद इंसानियत दिखाये कौन?

एक-दूसरे से आगे निकलना चाह रहे हैं,
पर खुद को बांपे कौन?

सपने तो सब देख रहे हैं,
पर उनको पूरा करे कौन?

दुनिया को बदलना सब चाह रहे हैं,
पर खुद को बदले कौन?

दूसरो को नसीहत सब दे रहे हैं,
पर खुद आजमाए कौन?

सकारात्मक रहना सब चाह रहे हैं,
पर खुद रहे कौन?

दुनिया सुधारें! सब बोल रहे हैं,
पर खुद को सुधारे कौन?

हम सुधरे तो दुनिया सुधरेगी,
यह सीधी बात स्वीकारे कौन?

❑❑❑❑

* भूतपूर्व विद्यार्थी
जे.डी.एम. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।